सारांश पुस्तिका

हिंदी में राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारत की अर्थव्यवस्था में मात्स्यिकी का योगदान

11 जुलाई, 2019

भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान

मत्स्यपुरी पी.ओ., कोचिन

भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना में नीली अर्थव्यवस्था : निदर्शन और परिदृश्य

मिरियम पॉल श्रीराम और श्याम एस. सलिम

भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन

ई मेल : Miriam.Sreeram@icar.gov.in

मिरियम पॉल

भारत प्रमुख समुद्रवर्ती देश और मात्स्यिकी क्षेत्र में सबसे अधिक योगदान देने वाले देशों में से एक है तथा मछली उत्पादन में भौगोलिक तौर पर द्वितीय स्थान पर है। भारतीय मात्स्यिकी और जलजीव पालन खाद्य उत्पादन का मुख्य सेक्टर है, जो 14 मिलियन लोगों को आजीविका एवं रोजगार प्रदान करने के साथ-साथ पौष्टिक सुरक्षा भी प्रदान करता है और कृषि निर्यात में अपनी भूमिका निभाता है। मछली एवं कवच मछली प्रजातियों की विविध संसाधनों और 10 से अधिक वैश्विक जैवि विवधता के साथ देश के मछली उत्पादन में स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर लगातार एवं टिकाऊ वृद्धि देखी जा रही है। वर्ष 2017-18 के दौरान कुल मछली उत्पादन 12.60 मिलियन मेट्रिक टन आकलित किया गया, इस में से करीब 65% अंतर्देशीय सेक्टर से और कुल उत्पादन का 50% पालन मात्स्यिकी से है, जो वैश्विक मछली उत्पादन का 6.3% आकलित किया गया है। सकल घरेलू उत्पादन (GDP) में इस सेक्टर का योगदान लगभग 0.81% है और देश के Ag – GVA में 5.23% है। भारत से किए जाने वाले कृषि निर्यात में मछली और मछली उत्पादों का हिस्सा सबसे अधिक है, जो मात्रा में 1.37 मेट्रिक टन और मूल्य में 5.78 बिलियन टन अमेरिकी डॉलर है। यह देश के कुल निर्यात का 10% और कृषि निर्यात का 20% है। महिला सशक्तीकरण में भी इस सेक्टर का महत्वपूर्ण योगदान है, जैसा कि 3 मिलियन से अधिक महिलाओं को मत्स्यन तथा इससे जुड़ी हुई कार्य विधियाँ जैसे प्रसंस्करण, मछली, कवच मछली तथा इनके उपोत्पादों का विपणन, जलीय एवं समुद्री संवर्धन के परिचालन कार्य, स्वयं सहायक ग्रुपों का प्रोत्साहन एवं विकास की तरह आजीविका के विविध विकल्प प्रदान किए जाते है। समुद्री मात्स्यिकी का समर्थन करने वाले जैव विविधता में वर्ष 1953 के 25 प्रमुख ग्रुपों की अपेक्षा वर्ष 2018 में 127 ग्रुपों (709 प्रजाति) तक का वर्धन हुआ है। आज भारत के मात्स्यिकी अनुसंधान एवं विकास को विश्व में ही बेहतर माना जाता हैं। मात्स्यिकी अनुसंधान के अलावा अनुसंधान एवं विकास द्वारा हजारों कार्मिकों को रोजगार का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ देश के बौद्धिक पूंजी भी बढ़ाई जाती है। मत्स्यन प्रयास और निर्यात में बढ़ावा होने के साथ मत्स्यन बंदरगाहों और पोर्टों का विकास होता है, जिससे मत्स्यन उद्योग में भी प्रगति होती है। इस लेख में, उत्पादन के विविध आयामों, निर्यात, विनिमय, रोजगार, निष्पक्षता और विविधता में वर्षों से लेकर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में होने वाले योगदान पर प्रकाश डाला गया है और इस क्षेत्र में आगे के विकास के लिए सुझाव दिया जाता है। लेख द्वारा यह भी समर्थन किया जाता है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदाता होने पर भी कृषि क्षेत्र (6%) की तुलना में मात्स्यिकी सेक्टर के निवेश में जी डी पी का सीमांत आबंट

न (0.6%) प्राप्त होता है। मात्स्यिकी और पशु पालन के नए मंत्रालय के गठन से मात्स्यिकी सेक्टर में बेहतर आधार, विस्तार एवं विकास हो जाएंगे। देश में होने वाले प्राकृतिक संपदाओं और मानव पूंजी की तरह भारत के पास आगामी दशक में उत्पादन एवं बाजार शेयर में विश्व मात्स्यिकी का नेतृत्व करने की क्षमता है। प्राथमिक आवश्यकता संवेगात्मक अवसंरचना विकास, मानव संसाधन विकास, प्रौद्योगिकी समर्थन तथा मूल्य वर्धन सहित प्रेरित संकल्पना और अभिनव उद्देश्य और सहभागिता प्रबंधन और प्रोत्साहन विकास के संदर्भ में प्रतिबद्धता होनी चाहिए।